मोहिनी एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Mohini Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 49, controlling revision 336430. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 49 — full electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 49 — whole English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.49.1–39, Sanskrit Wikisource revision 336430, not a transcription of the original text.

युधिष्ठिर का प्रश्न और राम–वसिष्ठ संवाद

KATHA 6.49.1–10

युधिष्ठिर जनार्दन से वैशाख शुक्ल एकादशी का नाम, फल और विधि पूछते हैं। कृष्ण कहते हैं कि बुद्धिमान रामचन्द्र ने पहले वसिष्ठ से यही पूछा था। राम सभी पाप और दुःख दूर करने वाले श्रेष्ठ व्रत को सुनना चाहते हैं; सीता-वियोग के दुःख सहने के बाद वे भयभीत होकर ऋषि से पूछते हैं। यह पद्म पुराण का चयनित संवाद है, वाल्मीकि रामायण का उद्धरण या सीता की वापसी का नया प्रसंग नहीं।

वसिष्ठ राम की दृढ़ भक्ति की प्रशंसा करते हैं और कहते हैं कि राम का नाम लेने से मनुष्य पवित्र होता है। फिर लोगों के कल्याण के लिए श्रेष्ठ, पावन व्रत बताते हैं: वैशाख शुक्ल पक्ष की मोहिनी एकादशी। उसके प्रभाव से मोह-जाल और पाप-समूह से मुक्त होने की धार्मिक प्रशंसा है। वे राम जैसे लोगों को व्रत करने और पूरी कथा ध्यान से सुनने का आग्रह करते हैं; सुनने से भी महान पाप नष्ट होने का फल-वचन है।

यहाँ मोहिनी नाम के व्रत की कथा है, समुद्र-मन्थन में विष्णु के मोहिनी रूप का आख्यान नहीं। दुःख-नाश और नाम-स्मरण का फल धार्मिक कथन है, किसी की पीड़ा को दोष देने या निश्चित उपचार और पुनर्मिलन का वादा नहीं।

Yudhishthira asks Janardana the name, fruit and observance of Vaishakha's bright Ekadashi. Krishna says wise Ramachandra earlier asked Vashishtha the same question. Rama wants to hear the best vow, praised as removing all wrongdoing and sorrow; having suffered separation from Sita, he asks the sage in fear. This is the selected Padma Purana dialogue, not a quotation from Valmiki's Ramayana or an added return-of-Sita episode.

Vashishtha praises Rama's steadfast devotion and says uttering Rama's name purifies a person. For the people's welfare, he then identifies a foremost purifying vow: Mohini Ekadashi in Vaishakha's bright fortnight. Its power is praised as freeing one from delusion's net and accumulated wrongdoing. He urges people like Rama to observe and listen attentively to the whole account; even hearing is praised as removing grave wrongdoing.

This account concerns the named Mohini vow, not Vishnu's Mohini manifestation at the churning of the ocean. Removal of sorrow and benefits of remembering the name are religious statements, not blame for someone's distress or promises of treatment or reunion.

भद्रावती, धनपाल और धृष्टबुद्धि का पतन

KATHA 6.49.11–24

सरस्वती के सुन्दर तट पर भद्रावती है। वहाँ चन्द्रवंश के दृढ़ और सत्यप्रतिज्ञ राजा द्युतिमान राज्य करते हैं। धनी वैश्य धनपाल शांत विष्णुभक्त हैं और पुण्य कार्य कराते हैं: प्याऊ, कुएँ, मठ, उद्यान, तालाब और घर बनाते हैं। मठ को अंग्रेज़ी तुलना के मंदिर से चुपचाप नहीं बदला गया। उनके पाँच पुत्र सुमना, द्युतिमान, मेधावी, सुकृत और धृष्टबुद्धि हैं; राजा और पुत्र के समान नाम से दोनों को एक पात्र नहीं बनाया गया।

पाँचवें पुत्र धृष्टबुद्धि का आचरण हानिकारक बताया गया है: दूसरों की पत्नियों से सम्बन्ध की इच्छा, भोगप्रिय संगति, जुआ और व्यसन, अन्याय तथा पिता के धन का नाश। देवपूजा, पितरों और द्विजों की ओर उसका ध्यान नहीं है; वर्जित भोजन और सुरा-पान भी स्रोत के पुराने धार्मिक मूल्यांकन में हैं। चौराहे पर गणिका को बाँहों में लिए घूमते देखकर पिता उसे घर से निकाल देते हैं और संबंधी त्यागते हैं। अपने आभूषण भी खर्च कर देने पर धन समाप्त होता है; गणिकाएँ भी छोड़ती और निन्दा करती हैं। वह वस्त्र-विहीन, भूखा और चिंतित होकर सोचता है कि कहाँ जाए और कैसे जिए।

उसी नगर में चोरी शुरू करता है। राजकर्मी पकड़ते हैं, पिता की प्रतिष्ठा के कारण छोड़ते हैं, और फिर बार-बार गिरफ्तारी तथा मुक्ति होती है। अंततः मजबूत बेड़ियाँ, चाबुक और बार-बार पीड़ा का वर्णन है। राजा उसे राज्य में न रहने की आज्ञा देकर बंधन से मुक्त करते हैं। भय से वह घने वन में चला जाता है। यह हिंसा और बहिष्कार का कथागत वर्णन है, दण्ड की सलाह नहीं; गरीबी, पेशे, जाति या पूजा न करने को किसी व्यक्ति की बुराई का प्रमाण न मानें।

Bhadravati stands beside the beautiful Sarasvati bank. Dyutiman, a steadfast, truthful king of the lunar lineage, rules there. Wealthy merchant Dhanapala is a peaceful Vishnu devotee who supports meritorious works: drinking-water stations, wells, mathas, gardens, tanks and houses. Matha is not silently replaced with the English comparison's temple. His five sons are Sumana, Dyutiman, Medhavi, Sukrita and Dhrishtabuddhi; the king and son sharing a name are not merged.

The fifth son's conduct is described as harmful: desire for others' wives, pleasure-seeking company, gambling and addictions, injustice and wasting his father's wealth. He neglects deity worship, ancestors and dvijas; prohibited food and sura drinking also appear in the source's historical religious judgments. Seeing him embrace a courtesan at a crossroads, his father expels him and relatives abandon him. Spending his own ornaments exhausts his wealth; courtesans also leave and reproach him. Without clothes, hungry and worried, he wonders where to go and how to live.

He begins stealing in that city. Royal officers arrest him but release him because of his father's standing; repeated arrests and releases follow. Eventually strong fetters, whipping and repeated suffering are narrated. The king expels him from the realm and releases his restraints. Afraid, he enters dense forest. This narrates violence and exclusion, not advice on punishment; poverty, occupation, caste or absence of worship is not evidence that a person is bad.

वन में हिंसा और कौण्डिन्य से निवेदन

KATHA 6.49.25–32

भूख-प्यास से पीड़ित धृष्टबुद्धि वन में इधर-उधर दौड़ता है और सिंह की तरह मृग, सूकर और चित्रल पशुओं को मारता है। वह मांस खाकर वन में रहता है, हाथ में धनुष और पीठ पर तरकश लिए पैदल चलता है। चकोर, मोर, कंक, तित्तिर और मूषिक सहित वन के पक्षियों तथा दूसरे जीवों को मारने का वर्णन है। स्रोत की सूची में मूषिक भी है; उसे चुपचाप पक्षी नहीं बनाया गया और कठिन जीव-नामों को निश्चित आधुनिक प्रजाति नहीं बताया गया।

कथा उसे निर्दयी, विवेक से अंधा और पूर्वजन्म के पापों के कीचड़ में डूबा बताती है। ये धार्मिक रूपक हैं, दृष्टिबाधित लोगों या संकटग्रस्त व्यक्ति का मूल्यांकन नहीं। दिन-रात दुःख और शोक में किसी पुण्य के उदय से वह कौण्डिन्य के आश्रम पहुँचता है। माधव मास में जाह्नवी में स्नान किए ऋषि के पास आता है। उनके वस्त्र से गिरती बून्दों का स्पर्श कथा में उसका पाप और अशुभ दूर करता है; अंग्रेज़ी तुलना केवल वस्त्र का हल्का स्पर्श कहती है। यह चिकित्सा, किसी के वस्त्र का जल लेने या नदी में उतरने की विधि नहीं।

वह हाथ जोड़कर कौण्डिन्य के सामने खड़ा होता है और करुणा माँगता है: किस पुण्य के प्रभाव से मुक्ति मिलेगी, यह बताइए। बून्दों के स्पर्श पर पहले की मुक्ति-भाषा और आगे व्रत के बाद की मुक्ति दोनों स्रोत में हैं; एक को हटाकर नया एकमात्र कारण नहीं बनाया गया।

Hungry and thirsty, Dhrishtabuddhi runs through the forest, killing deer, boar and chitrala animals like a lion. He lives on meat, walking with bow in hand and quiver on his back. The account lists killing forest birds and other creatures, including chakora, peacock, kanka, tittira and mushika. Mushika remains in the list without being silently made a bird; uncertain animal names are not assigned definite modern species.

The account calls him merciless, blinded in judgment and immersed in the mud of earlier-birth wrongdoing. These are religious metaphors, not judgments of visually impaired people or anyone in hardship. Suffering day and night, he reaches Kaundinya's hermitage through the arising of some merit. In Madhava month he approaches the sage after the latter's bath in Jahnavi. Contact with drops from the sage's garment removes wrongdoing and ill fortune within the narrative; the English comparison mentions slight garment contact only. This is not treatment or a procedure for taking garment water or entering a river.

With joined hands, he stands before Kaundinya and asks for compassion and the merit through which release occurs. Both release language at the earlier drops and release after the later vow remain in the source; neither is deleted to invent a single exclusive cause.

व्रत, गरुड़ और पूरा समापन

KATHA 6.49.33–39

कौण्डिन्य ध्यान से सुनने को कहते हैं और वैशाख शुक्ल पक्ष की प्रसिद्ध मोहिनी बताते हैं। इकाई 33 के संस्कृत में शुक्ल है, जबकि अंग्रेज़ी तुलना इस जगह कृष्ण पक्ष कहती है; चयनित संस्कृत का पक्ष रखा गया है, नया कैलेंडर नहीं बनाया गया। ऋषि कहते हैं कि उनके उपदेश से व्रत करने पर अनेक जन्मों के मेरु-समान पाप भी नष्ट होंगे। धृष्टबुद्धि प्रसन्न होकर कौण्डिन्य के बताए अनुसार व्रत करता है।

कथा में उसका पाप दूर होता है, दिव्य शरीर मिलता है और गरुड़ पर बैठकर सभी उपद्रवों से रहित वैष्णव लोक जाता है। नया पारिवारिक पुनर्मिलन या नगर में वापसी नहीं जोड़ी गई। वसिष्ठ राम से पूरा फल-वचन कहते हैं: तीनों लोकों के चर-अचर में मोहिनी से श्रेष्ठ कुछ नहीं; यज्ञ, तीर्थ और दान उसके सोलहवें भाग के भी बराबर नहीं, और कथा पढ़ने-सुनने का फल हजार गायों के दान जैसा है।

अलग समापन पद्म महापुराण की पचपन हजार वाली संहिता के उत्तर खंड, उमापति–नारद संवाद में वैशाख शुक्ल मोहिनी एकादशी का अध्याय 49 बताता है। कृष्ण का बाहरी उत्तर, राम–वसिष्ठ संवाद, धृष्टबुद्धि की पूरी कथा और अंतिम प्रशंसा सहित सभी 39 क्रमांकित इकाइयाँ इस मूल संक्षिप्त हिन्दी में पूरी हैं।

फल-वचन धार्मिक विश्वास है, स्वास्थ्य, धन या परलोक की गारंटी नहीं। किसी व्रत से चोरी, हिंसा या अन्य हानि की कानूनी और व्यावहारिक जिम्मेदारी नहीं मिटती। भोजन-पानी, सुरक्षित विश्राम और सहायता उपलब्ध रहें; बहिष्कार, पशु-हानि, नदी में प्रवेश या उपवास अनिवार्य नहीं। जुड़े उत्सव-पृष्ठ की तिथि जस की तस है; नया पारण या घड़ी का समय नहीं निकाला गया।

Kaundinya asks him to listen and names the well-known Mohini of Vaishakha's bright fortnight. Sanskrit unit 33 says bright, whereas the English comparison here says dark; the selected Sanskrit reading remains, without making a new calendar. The sage says observance on his advice removes wrongdoing accumulated over many births, even as great as Meru. Pleased, Dhrishtabuddhi performs the vow as advised.

Within the story, his wrongdoing disappears, he gains a divine body and, mounted on Garuda, goes to the Vaishnava world free of troubles. No family reunion or return to the city is added. Vashishtha completes the praise to Rama: nothing among the moving and unmoving in the three worlds exceeds Mohini; sacrifices, holy places and gifts do not equal its sixteenth part, and reading or hearing yields merit likened to giving a thousand cows.

The separate colophon identifies chapter 49 as Vaishakha's bright Mohini Ekadashi in the Umapati–Narada dialogue of the Padma Mahapurana's fifty-five-thousand collection, Uttara Khanda. All 39 numbered units are covered in original condensed Hindi: Krishna's outer answer, Rama–Vashishtha dialogue, the complete Dhrishtabuddhi account and final praise.

These benefits are religious beliefs, not guarantees of health, wealth or afterlife. A vow does not erase legal or practical responsibility for theft, violence or other harm. Food, water, safe rest and help remain available; exclusion, animal harm, river entry or fasting are not mandatory. The linked hub's date stays unchanged; no new parana or clock time is calculated.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Mohini Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.49.1–39, revision 336430, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.